...ग और शक्तिवाद

लेखक—
परम सन्त डाक्टर श्री चतुर्भुज सहाय जी

राजयोग और शक्तिवाद

वर्तमान काल में शक्तिवाद पर जितने लेख तथा पुस्तकें निकल रहीं हैं उनमें अधिकतर हठयोग वा तन्त्र शास्त्रों का ही आधार लिया गया है, राजयोग इस शक्तिवाद को किस प्रकार वर्णन करता है, उसमें सुषुप्त शक्तियों के जाग्रत करने तथा उनको उपयोग में लाने के लिये क्या-क्या क्रियाएँ हैं, उसके अन्दर इनका कितना महत्व है, वह लोग जो राजयोगी हैं इनसे क्या-क्या लाभ उठाते हैं, इनका स्थान राजयोग के अनुसार मनुष्य शरीर में कहाँ-कहाँ हैं, शक्ति पर अधिकार प्राप्त करने तथा उसको संचालन करने के लिये राजयोग ने कैसे-कैसे सरल साधन बताये हैं, इन साधनों से जिज्ञासुओं को कितने समय में सफलता प्राप्त हो सकती है, इत्यादि।

योग

जिन साधनों से आत्मा का साक्षात्कार किया जाता है तथा जिन उपायों से आत्मा का परमात्मा से मेल कराया जाता है उनको 'योग' कहा जाता है। यह योग प्राचीनकाल से दो भागों में विभक्त चला आ रहा है, एक राजयोग और दूसरा हठयोग। ऋषिकृत ग्रन्थों के देखने से पता चलता है कि राजयोग की शैली ऊँची और पुरानी है। वैदिक काल में राजयोग था, उपनिषदकाल में राजयोग था। शास्त्रीय काल में राजयोग था। फिर हठयोग की ईजाद कब हुई, कैसे हुई और क्यों हुई? इसके निर्णय करने में इतिहासज्ञों को बहुत कुछ सन्देह है। कई एक का मत है कि सब से प्रथम हठविद्या का प्रादुर्भाव शिवजी से हुआ और पीछे गोरखनाथ जी ने इसका प्रचार किया। कई कहते कि बौद्धों ने

इसको रिवाज दिया। कोई-कोई अपनी सम्मति यह प्रकट कर रहे हैं कि तन्त्र ग्रन्थों से यह विद्या निकाली गई इत्यादि । इनमें से कोई भी बात सत्य हो परन्तु इसमें किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि शास्त्र और उपनिषदों में हठयोग के साधनों का कहीं वर्णन नहीं आया । उपनिषदें एकसौ आठ बतलाई जाती हैं परन्तु यहाँ पर हमारा तात्पर्य केवल उन उपनिषदों से है कि जिनको वैदिक उपनिषद् कहा जाता है और जिनकी संख्या दस से अधिक नहीं है । वास्तव में ऋषिप्रणीत यही दस हैं शेष सब आधुनिक हैं। शास्त्र भी छैः हैं इनमें सांख्य और योग दर्शन का सम्बन्ध राज विद्या से है, शेष में अन्य विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

बौद्ध धर्म

ईसा से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व शाक्तमत के हिंसावाद से ऊब कर गौतम बुद्ध ने जङ्गल की राह ली। उसने कठिन तपश्चरिया और त्याग का जीवन व्यतीत करते हुए आत्मचिन्तन किया। बुद्ध को असलियत का पता मिला । उसको साक्षात्कार हुआ। इस प्रकार आदेश पाकर उसने अपने नवीन मत का प्रचार करना शुरू कर दिया । उसकी वाणी में प्रभाव था, उसके शरीर में आकर्षण था, जनता उसकी ओर झुक पड़ी और उसके उपदेशों पर चलने लगी । सहस्रों नर-नारी विरक्त बन बुद्ध के बतलाये हुए साधनों में जुट पड़े और हिन्दुओं के शाक्त धर्म को तिलांजली दे अपने निज रूप का अनुभव प्राप्त करने लगे। बुद्ध देव ने घूम-घूम कर अनेक सङ्घ बना डाले, अनेक आश्रम खोल दिये जिनमें त्यागी भिक्षुक और भिक्षुकाएँ रह कर विद्या उपार्जन करने लगे। परन्तु बुद्ध के पश्चात् थोड़े ही दिनों में इनमें आपस में मतभेद हो गया और सौ वर्ष के भीतर इनकी अठारह शाखाएँ बन गईं। धीरे-धीरे हिन्दू धर्म की रस्मों ने भी इनमें

प्रवेश किया और यह लोग अनेक देवी-देवताओं की उपासना करने लगे।

सम्राट अशोक के पश्चात् बौद्धों में एक और विप्लव आया। एक अपूर्व विद्वान पं० नागार्जुन ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेली। यह नागार्जुन पंजाब के महाराजा कनिष्क के राज पंडित का पुत्र था। तन्त्रविद्या का अच्छा विद्वान ही नहीं था बल्कि एक सिद्ध भी था। उसने पहिले मद्रास के समीप श्री शैल पर कुछ दिन तपस्या की फिर नालन्दा की यूनीवर्सिटी में पहुँच कर बौद्ध ग्रन्थों की तरमीम करा डाली। शक्तिशाली होने के कारण अनेक बौद्धों ने इसका लोहा माना और इसके नवीन धर्म में शामिल हो गये। इसने अपने इस मत में तन्त्रविद्या और हठ साधनों को प्रवेश किया और उनकी ही प्रधानता रक्खी उस समय से बौद्ध मत भी सिद्धियों और शक्तियों के चक्कर में पड़ पूरा शाक्त धर्म बन गया। नागार्जुन ने इस अपने नवीन मत का नाम 'महायान' रक्खा। पुराना बौद्ध धर्म "हीन यान" के नाम से पुकारा जाने लगा। महायोगीश्वर श्री गोरखनाथ जी के गुरु श्री मच्छेन्द्रनाथ जी इसी महायान पंथ के अनुयाई थे और बड़े सिद्ध थे। बौद्ध लोगों को जब भारत से देश निकाला दिया गया तो महायानी-लोग अपने ग्रन्थों को ले तिब्बत को भाग गये और वहाँ से चीन, जापान और मंगोलिया इत्यादि तक फैल गये और हीन यान के अनुयाई ब्रह्मा-श्याम और सीलोन की ओर जाकर बस गये। इसीलिये आज पूर्ण हठ योगी तथा सिद्ध तिब्बत में पाये जाते हैं। उनके यहाँ हठ और तन्त्र की पुस्तकें भी सुरक्षित हैं। भारत वर्ष मुसलमानों के अत्याचार से खाली हो गया।

तन्त्रयोग और हठयोग का मुख्य विषय सिद्धियों को प्राप्त करना तथा शक्तियों को जागृत करना है। तान्त्रिक लोग इस काम के लिये भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की आराधना करते,

उनकी तामसिक पूजा करते और उनके द्वारा बड़े-बड़े आश्चर्य-जनक काम किया करते थे। मारण, मोहन, उच्चारण, वशीकरण इत्यादि अनेक कौतुक करके दिखा देना तान्त्रिकों के लिये एक साधारण बात थी। ऐसे लोगों को दुनियाँ सिद्ध मानकर पूजती थी और उनका बड़ा मान करती थी। इनकी मुख्य आराध्य देवी भगवती-शक्ति थी कि जिसकी भिन्न-भिन्न शक्तियों के प्राप्ति के लिये तान्त्रिकों ने उसके अनेक नाम रखे थे और अनेक प्रकार के रूप उसके बना लिये थे। महामाया, भगवती, काली, चामुण्डा, चण्डी, कामाक्षी, कालिका, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, तारा, गौरी, अम्बिका, भवानी, भैरवी, मीनाक्षी, ललिता, जोगमाया इत्यादि सब उसी शक्ति के भेद हैं। सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण के द्वारा आदि शक्ति महामाया तीन भागों में विभक्त हो गई। तामसी पुरुषों ने तथा आसुरी प्रकृति के लोगों ने उसके आसुरी वा तामसी गुणों के अनुसार उसको नाम और रूप दे इष्ट साधन किया तथा सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिये राजसी प्रकृति वालों ने राजसी रूप बना डाला और सात्वकी भाव वाले उसके सतोगुण की ओर झुक पड़े।

लङ्का के राक्षस तथा ओझा कर्म करने वाले उसके तामसी रूप के उपासक थे, जो मन्त्रयोग के द्वारा उसकी शक्तियों को अपने अन्दर धारण कर लिया करते थे। प्राचीन बौद्ध शून्यवादी थे, वह शरीरी आत्मा से भिन्न किसी देवी-देवता तथा ईश्वर को नहीं मानते थे परन्तु नागार्जुन की सामर्थ्य और शक्ति से प्रभावित होकर उन्होंने भी देवताओं की उपासना आरम्भ कर दी और अनेक देवताओं की मूर्तियाँ बना कर अपने स्थलों में रख लीं। किसी-किसी का मत है कि इसी समय से बौद्धों में मूर्ति पूजा का अधिक प्रचार हुआ। बौद्धों की आराध्य देवी का नाम 'तारा' है कि जिसको सारी शक्तियों की अधिष्ठात्री देवी मानते हैं। सुना

जाता है कि—अब भी तिब्बती लामा तारा देवी की सहायता से बड़े-बड़े चमत्कार किया करते हैं । वह किसी आदमी को मार देते हैं फिर मंत्र पढ़ कर उसे जिला देते हैं, बिना अग्नि के दीपक जला देना, हवा में उड़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँच जाना इत्यादि उनके बायें हाथ का कर्त्तव्य है । यह सब तन्त्र विद्या कहलाती है । इस उपरोक्त कथन से हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि तन्त्र शास्त्र बौद्धों की ईजाद नहीं है बल्कि उससे प्राचीन है बौद्धों ने तान्त्रिक वाममार्गियों का नाश करना चाहा था परन्तु खुद ही इसके शिकार बन गये और गौतमबुद्ध के "अहिंसा परमोधमः" वाले उपदेश को भूल कर भक्ष्य-अभक्ष्य सब ही खाने लगे जैसा कि आज तिब्बत, चीन और जापान में देखा जाता है । यह सब तन्त्रयोग में पड़ जाने के कारण ही हुआ ।

मन्त्र वा यन्त्र

शक्ति संचालन के लिये तान्त्रिकों के यहाँ दो प्रकार के प्रयोग हैं एक मन्त्र और दूसरा यन्त्र । जो शब्द शरीर के मुख्य-मुख्य स्थानों से उच्चारण करते हुए मुख से बोले जाते हैं उनको मन्त्र कहते हैं और जो कागज, ताम्रपत्र अथवा पत्थर और पृथ्वी पर बनाये जाते हैं उनको यन्त्र कहते हैं । मन्त्र और यन्त्र में उसका प्रयोग करने वाला देवताओं के बल पर अपनी मानसिक शक्ति (will) देता है और फिर उसका प्रयोग करता है । जहाँ मन्त्र से काम नहीं निकलता वहाँ यन्त्र से काम लिया जाता है । दिखाने के लिये, धन बटोरने के लिये अथवा प्रशंसा प्राप्त करने के लिये ही तान्त्रिकों के यह सब आसुरी कर्म होते हैं इस लिये इस योग को "आसुरी योग" कहा जाता है । प्रत्येक मन्त्र का बीज, वाहन और देवता अलग-अलग होता है । उनके जाने बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होता, श्रीं, ह्रीं, क्लीं, ऐं इत्यादि मन्त्रों के बीज कहे जाते हैं यह प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण से पूर्व बोले जाते हैं

जैसे "ॐ श्रीगणेशायनमः" "ॐ ऐं सरस्वतीनमः" ॐ ह्रीं महामायानमः, ॐ क्रीं कालिकायनमः इत्यादि। क्लीं गायत्री का भी बीज मन्त्र है।

वेद

वेदों में भी मन्त्र हैं परन्तु वह सब इनसे भिन्न हैं। वेदों के मन्त्रों का सन्बन्ध ब्रह्माजी से था और इन तान्त्रिक मन्त्रों का शिवजी से है। मन्त्र उच्चारण के समय इस बात के जानने की बहुत जरूरत है कि मन्त्र का कौन अक्षर शरीर के किस स्थान से उच्चारण करना चाहिये। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो उस मन्त्र का कुछ प्रभाव नहीं होगा। किसी काम के करने के लिये आकाश तथा वायु की गति में कितना परिवर्तन करने की आवश्यकता है, उसमें किस प्रकार की तरंगे पैदा करने पर हमारा काम पूरा होगा, इस बात का ज्ञान हमारे अन्दर होना चाहिये, हमको शरीर के केन्द्र तथा नाड़ियों पर अधिकार प्राप्त होना चाहिये तब ही हम उनको ठीक उच्चारण कर सकते हैं। खाली मुँह से बकने से कुछ लाभ नहीं हो सकता।

ऋषिकाल के विद्वान वेद मन्त्रों का उच्चारण जानते थे और इन्हीं के द्वारा वह अपने यजमानों से यज्ञ करा उनकी आशाओं को सफलीभूत बनाते थे परन्तु महाभारत ने इन सब का नाश कर दिया। उसी समय से वेद विद्या यहाँ से लोप हो गई और ऐसी लोप हुई कि भारतवर्ष में वेद की पुस्तकें भी कहीं ढूँढ़ने को नहीं रही। श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को वेद अन्य देशों से मंगाने पड़े। स्वामी जी ने वेदों का फिर से प्रचार किया और उन्हीं की कृपा से आज वेद मन्त्र सर्व साधारण लोग भी बोलते हुए देखे जाते हैं। परन्तु वेद मन्त्रों के अक्षर शरीर के किस-किस स्थान से निकालना चाहिये? इस बात का ज्ञान स्वामी जी भी या तो करा नहीं सके, या हम लोगों को उसका अनाधि-

कारी समझ कराया नहीं; क्योंकि यह सब जब ही हो सकता था जब वेद वक्ता योग साधन भी करने वाले होते और अपने शरीर के चक्रों का अनुभव तथा उन पर अधिकार रखने वाले होते। केवल मुख से ही उच्चारण करते रहना—वेदों का प्रभाव कम करना है।

सावरी मन्त्र

तान्त्रिकों के पश्चात् मन्त्र विद्या की एक तीसरी सृष्टि हुई कि जिसके निर्माणकर्ता महात्मा श्री 'सावरनाथ' जी थे। इनके मन्त्र 'सावरी मन्त्र' के नाम से प्रसिद्ध हैं। सावरनाथ जी, श्री गुरु गोरखनाथ जी के गुरु भाई तथा श्री मच्छेन्द्रनाथ जी के शिष्य थे। मच्छेन्द्रनाथ जी ने अपने मुख्य शिष्य बारह बनाये थे जिनमें गोरखनाथ जी और सावरनाथ जी अधिक शक्तिशाली थे। गुरु गोरखनाथ जी का मत अद्वैतवाद था। श्री मच्छेन्द्रनाथ बौद्ध थे। पर सावरनाथ इन दोनों में से किस धर्म के अनुयायी थे इस बात का पता अभी तक ठीक-ठीक नहीं मिल रहा है। वह कोई भी हों परन्तु एक नवीन मन्त्र रचना कर और उनके अन्दर बल दे देना उनके शक्तिशाली होने का पता देता है। गुरु भाई के नाते शक्ति देने में उनका हाथ श्री गोरखनाथ जी ने भी बंटाया था इसीलिये इनके मन्त्रों में साथ ही साथ गोरखनाथ की भी छाप पड़ती है। आजकल जिन मन्त्रों से नीच लोग बिच्छू तथा सर्प इत्यादि का विष झाड़ा करते हैं यह 'सावरी मन्त्र' ही हैं। नीचे सावरी मन्त्रों के नमूने देखिये—

सावरी मन्त्रों के नमूने

१—अरकम-मरकम, अविनासी-आघोसी जो यह पढ़े...... कभी न होसी। जो होसी विश्वमित्र बैशेश्वर की आन। जो जाने और को न बतावै। चौदह चार अठारह गौ मारे की हत्या॥

इस मन्त्र से एक साधू पानी पढ़ कर देता था और उससे लोगों का एक कठिन रोग फौरन आराम होते देखा गया था।

२—ओ३म् गङ्ग-जमुन से लाऊँ बारूँ। लै कीला डाढ़ उतारौं तालू। ......जी की आन॥

इससे एक मनुष्य डाढ़ के दर्द को बन्द कर दिया करता था। मन्त्र ने कभी खता नहीं की। २१ वेर होली-दिवाली की रात को पढ़ कर धूप देने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार के सब मन्त्र हैं अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इनमें शक्ति है।

शक्ति देना

किसी शब्द के अक्षरों में शक्ति दे देना ही उस शब्द को "मन्त्र" बना देना है। ऋषियों ने वेद मन्त्रों में यह शक्ति सीधी परमात्मा वा ब्रह्म से खींच कर भरी थी। तान्त्रिकों ने ईश्वर को छोड़ दिया और अपने मन्त्रों के लिये देवताओं का सहारा लिया, इन देव गणों की शक्तियों से तान्त्रिकों के काम होने लगे। मन्त्र प्रयोग से पूर्व यह लोग किसी देव को मीडियम बनाते और उसी के द्वारा अपने सब कार्य करते थे। परन्तु सावरनाथ ने इस सिस्टम को भी उड़ा दिया, उन्होंने अपने योग बल से ही सब कुछ कर डाला। यह तीनों प्रकार के मन्त्रों का भेद है।

जिनमें मनोबल हो, जिनमें आत्मबल हो वह अपनी शक्ति द्वारा किसी शब्द को मन्त्र बना सकते हैं और किसी वस्तु को मन्त्र बना सकते हैं। इसको अब भी इस वर्तमानकाल में कोई भी शक्ति सम्पन्न महा पुरुष कर सकता है। हम नीचे इस विषय को कई दृष्टान्तों से समझाते हैं ताकि हमारी बात आपकी समझ में आ जाय।

दृष्टान्त १

श्री कबीर साहब कहीं बाहर गये हुए थे, उनके पुत्र श्री कमाल साहब उपस्थित थे, कोई बीमार आया, वह जीवन से निराश हो चुका था, हकीम वैद्यों ने उसे कोरा जबाब दे दिया था, वह कमाल साहब के पाँव पर गिर पड़ा, रोने लगा। कमाल साहब ने पूछा, बात कहो, क्यों रोते हो क्या दुःख है ? उससे तो बोला नहीं गया पास खड़े हुए दूसरे लोगों ने उसकी बिपद कहानी सुनाई, उन्हें दया आ गई, बोले—घबड़ाओ नहीं मुख से तीन बेर राम-नाम बोलो अभी अच्छे हो जावोगे। ऐसा ही हुआ, तीसरी बेर राम निकलते ही वह अच्छा चंगा हो गया। ऐसा मालूम देता था कि इसको कभी रोग हुआ ही नहीं था।

आज राम-नाम जपते लाखों मनुष्य पाये जाते हैं परन्तु वैसे ही दुःखी। इसका कारण केवल यही है कि इन्होंने अपने राम-नाम में किसी महापुरुष से शक्ति नहीं दिलवाई, इसलिये शब्द में प्रभाव नहीं आया। कमाल साहब ने उस रोगी के लिये राम शब्द में अपनी इच्छा शक्ति दे दी थी इसलिये उसके उच्चारण करते ही प्रभाव हुआ।

दृष्टान्त

बहुत दिन की बात है, आगरा जिले के एक मुसलमान सबइन्स्पेक्टर पर रिशवत सितानी का केस चला, वह मुअत्तिल कर दिये गये, घटना सत्य थी, इस लिये सारे ही अफसरान उनके खिलाफ हो गये, बचने की कोई आशा न थी, उसमें उन्हें अवश्य ही जेल देखनी पड़ती। उन दिनों फिरोजाबाद में एक वृद्ध मुसलमान फकीर रहते थे (इन फकीर साहब से हमारा भी परिचय खूब था और वह हमेशा हमारे ऊपर प्रेम दर्शाते थे) सबइन्स्पेक्टर उनके पास पहुँचे, क़दम पकड़ लिये, उन्हें दया आ

गई, सारा किस्सा सुना, फिर बोले—तुम शुद्ध पवित्र होके मसजिद में बैठो, रोजा रक्खो, माला हाथ में लेकर निरंतर एक मन्त्र का जाप करो, तीन दिन में तुम्हारी आफत हट जायगी। वह मन्त्र यह था—"आज, कल, परसों"। सबइन्स्पेक्टर ने विश्वासपूर्वक ऐसा ही किया, परिणाम यह निकला कि तीसरे दिन सुपरैन्टैन्डेन्ट ने बुला कर उनसे कहा कि हमने तुम्हें माफ कर दिया। हाँ आगे ठीक काम करना।

अब सोचिये—आजकल परसों, के शब्द ऐसे हैं कि जिनको कोई भी मन्त्र नहीं कह सकता परन्तु फकीर साहब ने शक्ति देकर उनको मन्त्र बना दिया था और इन शब्दों ने समय पर काम करके दिखा दिया। लेकिन वह उतनी ही देर के लिये था।

इस प्रकार के अनेक दृष्टान्त हमको मालूम हैं परन्तु 'मंत्र' किसको कहते हैं, तथा वह किस प्रकार बनाये जाते हैं? इस उतनी बात के समझने के लिये यह दो गाथाएँ काफी हैं। अब आगे "यन्त्र" बनाने की विधि वर्णन करते हैं।

यन्त्र विधि

किसी वस्तु में चाहे वह कागज हो, ताम्रपत्र हो, भोज पत्र हो अथवा शिला इत्यादि हो उस पर कुछ लिख कर वा कोई नक्श इत्यादि बना कर उसमें शक्ति दे देना अथवा जल, दूध, लौंग तथा बूटी के अन्दर शक्ति पहुँचा देना "यन्त्र" कहलाता है। हिन्दुओं के "कवच" और मुसलमानों के गण्डे-तावीज इसी सिद्धान्त को लिये हुए हैं।

तन्त्र शास्त्रों ने ऐसे यन्त्रों की अनेक विधियाँ वर्णन की हैं। मन्त्र और यन्त्र दोनों सिद्धि किये जाते हैं। उनकी क्रियाएँ हैं। जिनको सिद्धि करना होता है वह पुस्तकों से नहीं गुरु मुख से सुन कर व सीख कर विधि पूर्वक अनुष्ठान करता है तब वह मन्त्र वा यन्त्र सिद्ध होकर बड़े-बड़े आश्चर्यजनक कार्य करके दिखाता

है। संसार उनको देख कर चकित हो उठता है और ऐसे सिद्धों की प्रशंसा होने लगती है। सम्पति आने लगती है।

वेद मन्त्रों को सिद्ध करना महा कठिन था, उन पर प्राचीन युग के ऋषिगण ही अधिकार प्राप्त कर सके थे। आजकल के निर्बल और भ्रष्ट आचरण के मनुष्य वेद मंत्र सिद्ध नहीं कर सकेंगे यही बात विचार कर तन्त्र विद्या की उत्पति की गई। परन्तु तान्त्रिक लोगों ने भी इसको बहुत सरल नहीं किया सम्भव है कि उनका यह काम उस युग के अनुसार ठीक हो कि जब तन्त्र विद्या की रचना हुई थी। इनके यहाँ का सरल से सरल साधन यह है कि कम से कम यम-नियम के साथ पाँच लाख जाप हो। तब मन्त्र पर अधिकार होता है। परन्तु सावर नाथ जी ने अपने मन्त्रों के लिये केवल इतना ही बन्धन रक्खा कि होली और दिवाली की रात्रि को शुद्धतापूर्वक मन्त्रों को पढ़ते हुए यदि पाँच वेर भी अग्नि में धूप चढ़ा दी जाय तो उनका सावरी मन्त्र सिद्ध होकर काम देने लगता है। इसी प्रकार किसी यन्त्र वा कवच को धूप देने पर वह शक्तिवान हो कार्य के योग्य बन जाता है। यह सावरनाथ जी की कृपा का फल कलियुगी जनता को पहुँचा।

तंत्रविद्या और मुसलमान

इतिहास बतलाता है कि शाक्त धर्म भारत वर्ष तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि उसके प्रचारक मिश्र और यूनान होते हुए पश्चिमीय सारे देशों में फैल गये। उन्होंने अरब, अफरीका, फिलस्तीन और शाम इत्यादि के जंगली मनुष्यों को बाम मार्गी बना डाला। यह लोग यज्ञ करते और अनेक देवी-देवताओं के नाम पर कुरबानी (बलि) किया करते थे। इनका मुख्य केन्द्र यूनान की राजधानी "एथेन्स" में था। जहाँ पर अब तक सिंह वाहनी अष्ट भुजी देवी की मूर्ति पीतल की रक्खी हुई है। मुसलमान ईसाई और यहूदियों के आदि पुरुष "हजरत इब्राहीम" शाक्त

थे वह यज्ञों में पशु बलि किया करते थे। मिश्र तथा अफ्रीका के रहने वाले मन्त्रविद्या निहायत अच्छी जानते थे। हजरत मूसा की लड़ाई के समय मिश्रियों ने मन्त्र शक्ति द्वारा अनेक कौतुक दिखाये थे। अरबियों ने मक्के के शिवालय में तीनसौ साठ देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित की थीं। वह लोग ईश्वर को भूल अपना सर्वे-सर्वा इन्हीं मूर्तियों को जानते थे, उन्हीं की आराधना करते थे। अब ठीक तेरह सौ पचपन वर्ष पूर्व हजरत मुहम्मद साहब ने एक नये धर्म का बीज बोया। जिसको "इस्लाम" कहते हैं। इनकी शिक्षा यह थी कि चारों ओर से सिमट कर, सब ओर से चित्त हटा कर, ईश्वर की उपासना करना ही मनुष्य का मुख्य धर्म है। इन्होंने मक्का के मन्दिर से सारी मूर्तियों को निकाल कर बाहर के परकोटे में रखवा दिया। देवी-देवताओं के मानने वालों को काफिर का खिताब दिया। उन पर जुल्म ढाये। कत्ल किये, सब कुछ किया परन्तु फिर भी "शाक्त धर्म" किसी न किसी रूप में उनसे जुदा न हो सका। उन्हीं को अपने प्रचार के कार्यों के लिये "जिबराईल" इत्यादि फरिश्तों (देवों) की सहायता लेनी पड़ी। कुरबानी की रस्म खुदा के नाम पर जारी रही। झाड़-फूँक और गण्डे-तावीज के प्रयोगों से चमत्कार दिखा-दिखा कर जनता को आकर्षित करना तथा अपनी महानता का सुबूत देना भी प्रचलित रहा जो कि तन्त्र विद्या का एक अंग था।

अरबी लिपि

कहते हैं कि हजरत मुहम्मद साहब से पूर्व अरब के जाहिलों की न कोई मुख्य लिपि थी, न कोई उनका व्याकरण था। सबसे प्रथम हजरत अली ने जो कि हजरत मुहम्मद साहब के दामाद तथा उनके पश्चात् चौथे खलीफा (गद्दीधारी) थे इसको बनाया। उसी समय से यह अरबियों की भाषा बन गई और इसी भाषा में वहाँ का सारा काम होने लगा।

जिन दिनों अरब के खलीफा लोग अरबी भाषा में अनेक ग्रन्थ निर्माण करा रहे थे तथा अनेक पुस्तकों का तरजुमा (उल्था) अरबी जुबान में किया जा रहा था, उनकी दृष्टि तन्त्र शास्त्रों की ओर घूमी। उन्होंने अनेक नक्श (यन्त्र) अरबी हरफों में नकल कर लिये, पन्द्रह-बीस और एकसौ एक इत्यादि के नक्श जैसे हिन्दुओं में हैं वैसे ही मुसलमानों में पाये जाते हैं सम्भव है कि यह तन्त्र ग्रन्थों से ही लिये गये हों। इसके अतिरिक्त बहुत से यन्त्र-मन्त्र उन्होंने नवीन बना डाले और उनमें बड़े-बड़े महान् पुरुषों ने शक्तियाँ देकर उन्हें चालू कर दिया जो अभी तक मुसलमानों में प्रचलित हैं। यह सब अरबी जुबान में हैं।

सबसे प्रथम हजरत मुहम्मद साहब ने कुरान शरीफ की कुछ आयतों को शक्ति देकर उनको मन्त्र बनाया और मुसलमान लोग इनके द्वारा मुख्य-मुख्य चमत्कार दिखाने लगे। हरजत मुहम्मद साहब के पश्चात् इस्लाम चार फिर्कों में तकसीम हो गया—(१) चिश्तिया, (२) कादरिया, (३) सुहरवर्दिया और चौथा नक्श वन्दियाँ। इन चारों के आदि आचार्यों ने कुछ यन्त्र-मन्त्र अलग-अलग और बनाये जो कि उनके अनुयाइयों में आज भी प्रचलित हैं। इस प्रकार तन्त्र विद्या का प्रचार इस्लाम में हुआ।

इस्लाम और योग

हम ऊपर बता आये हैं कि शाक्त धर्म दो भागों में बटा था। एक तन्त्र और दूसरा योग। कुछ लोग यन्त्र और मन्त्र के द्वारा मुख्य-मुख्य प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त कर चमत्कार दिखाते फिरते थे, यह लोग 'तान्त्रिक" कहलाते थे और दूसरे प्रकार के योग साधनों द्वारा अपनी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत कर उनके सहारे कौतुक किया करते थे। इनका लक्ष्य केवल सिद्धियाँ ही थीं। अपनी शक्तियों को साधनों द्वारा केन्द्री भूत करना और समय पर उनकी एक धार बना कर प्रयोग करना ही

२—लिई लाफे कुरॅशिन ईलाफिहिम रिहला तश्ताए वस्सैफ फलिया बुजू रब्बे हाजिल बैतिल्लजों अत आ मुहिम मिन जूइम व अमाना हुममिन खौफ।

इसको रोजाना विधि सहित १०१ वेर जाप कर लेने से कुछ दिन पश्चात् मनुष्य में आकर्षण शक्ति बढ़ जाती है उसका मुख देदीप्यमान हो जाता है और वह जहाँ कहीं जायगा लोग उसकी इज्जत व प्रतिष्ठा करेंगे तथा उससे प्रेम करने लगेंगे ! इस प्रकार के सैकड़ों मंत्र हैं कि जिनका प्रयोग मुल्ला-मौलवी-फकीर रोजाना किया करते हैं।

ऊपर दो नमूने हमने अरबी मंत्रों के दिखाये पीछे फारिस के लोगों ने अपनी भाषा में मंत्र रचना की। उनका एक मंत्र भी सुनिये:—

१—मराजाय शुद खर मरा जाय शुद। तो ख्वाही बिजो तो ख्वाही बिजा॥ इसको कुएं की ठीकरी पर लिखकर कुष्ठी स्त्री के कमर या रांन पर बांध दे तो बच्चा जल्द उत्पन्न होगा। नीचे यंत्र वा कवचों के दो एक नमूने और बताते हैं। ऐसे यंत्र व मंत्र वेतादाद हैं परन्तु आपको उन सबके झगड़े मे पड़ने से क्या मतलब। आपका तो भगवान के चरणों में प्रीति रखने से ही भला होगा और यही मनुष्य कर्तव्य है। यह सब तो इधर के ही झमेले हैं।

पन्द्रह का नकशा

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इसको पीपल के पत्ते पर लिख कर बाजू पर बांधने से तीसरे दिन आने वाला ज्वर रुकता है। यदि अनार की कलम से कागज पर डेढ़ लाख-इसको लिखकर फिर आटे में गोलियां बनाकर मछलियों को खिलावै तो यह सिद्ध हो जाता है और उस समय अनेक कौतुक करके दिखाता है। लिखते समय हिन्दुओं में "ॐ ह्रीं" और मुसलमानों

में "या-काबिज़ों" पढ़ते जाते हैं। और शुक्ल पक्ष की दौज के पश्चात प्रथम शुक्रवार को लिखना आरम्भ करते हैं।

सिद्धि बीस यन्त्र

६	४	२	८
९	१	७	३

हिन्दुओं और मुसलमानों में इस यंत्र का बहुत ही महत्व है। असली बीसा यंत्र की लोगों को बहुत तलाश रहती है, परन्तु इसके जानने वाले मिलते नहीं हैं, इसी लिये आज हम इसको प्रकाशित किये देते हैं। इसके लिखने की अलग-अलग क्रियायें हैं। किस काम के लिये किस खाने को प्रथम भरना चाहिये। कौनसा अक्षर प्रथम लिख के दूसरा लिखना चाहिये इसके जानने की बहुत जरूरत है, वरना यंत्र कुछ काम नहीं करता। इसको भी सिद्ध किया जाना है। एक अति प्राचीन देवी के मंदिर के द्वार के ऊपर पत्थर में यह यंत्र इस प्रकार खुदा हुआ था।

॥ ॐ ॥

६			८
	४	२	
	१	७	
९			३

मुसलमानों के यहां इसकी क्रिया क्या रक्खी गई है यह हम को ठीक-ठीक मालूम नहीं है परन्तु तान्त्रिकों के यहाँ इसका विधान यह है कि जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, इसको रात्रि में लिख कर "ॐ ह्रीं ह्रां सरस्वतै नमः" एक सौ एक बेर जप के धूप दे। कोयले पीपल की छाल के होने चाहिये। लिखा है कि ऐसा करने के उपरांत जो इस कवच को धारण करता है उसके सर्व कार्य सिद्धि होते हैं। इसी प्रकार १८ व ३४ व ७२ व १०१ इत्यादि के यन्त्र भी हिन्दू-मुसलमानों में एक से ही पाये जाते हैं। इससे यह पता चलता है कि यह विद्या तान्त्रिकों से उनमें पहुँची।

ईसाई व यहूदी

हिन्दुओं में, बौद्धों में, तथा मुसलमानों में शक्तिवाद कहां

तक और कैसे प्रचलित हुआ इसको हम संक्षेप में ऊपर बता चुके हैं अब दुनियाँ के बड़े मजहबों में केवल दो ही शेष रहते हैं एक यहूदी धर्म और दूसरा ईसाई धर्म। आओ-इनकी ओर भी थोड़ा देखें। यहूदी धर्म की बुनियाद डालने वाले "हजरत मूसा" थे और ईसाई धर्म के प्रचारक हजरत—"ईसा मसीह" थे। जब हम इन दोनों के जीवन पर विचार करने लगते हैं तो पहली बात जो हमको पुस्तकों से मालूम होती है वह यह है कि हजरत मूसा-तन्त्र विद्या के अपूर्व विद्वान ही नहीं थे बल्कि वह उन सब शक्तियों पर पूर्ण अधिकार भी रखते थे और उनका प्रयोग करना भी खूब जानते थे। यह शिक्षा उन्होंने मिश्र के बादशाह 'फरऊन' के राज गृह में रहकर प्राप्त की थी। उन दिनों मिश्र विद्या का केन्द्र था, वहाँ बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटियाँ थीं। साइन्स और फिलोसोफी वहाँ की प्रसिद्ध थी। 'फरऊन' अपने वैज्ञानिक आविष्कारों के मद में चूर हो ईश्वर को भूल बैठा था, वह पक्का नास्तिक बन गया था और अपने को सब कुछ समझता था। वह अपनी शक्तियों पर अधिकार रखता था और उनके द्वारा बड़े-बड़े काम करके दिखा दिया करता था। मूसा की उससे अन-बन हो गई, लड़ाई छिड़ गई, दोनों ओर से एन्द्र-जालिक मन्त्रों का प्रयोग होने लगा, ब्रह्म अस्त्र छूटने लगे अन्त में मूसा की विजय हुई और फरऊन मारा गया। इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हजरत मूसा के जीवन चरित्र में ऐसी पाई जाती हैं जिनसे यह पता चलता है कि मूसा तन्त्र-विद्या अच्छी जानते थे और इन्हीं सिद्धियों ने उनको नवीन मत के फैलाने में सहायता की और वह सफल हुए।

हजरत ईसा मसीह

हजरत मुहम्मद साहब की तरह हजरत ईसा मसीह भी पढ़े लिखे न थे परन्तु इनकी आध्यात्मशिक्षा बौद्ध धर्म में हुई।

किसी किसी का मत है कि ईसा मसीह हिन्दुस्तान आये, और नैपाल में रह कर इन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की, और किसी किसी का यह मत है कि इन्होंने अपने ही देश में बौद्ध शिक्षा पाई। यह दोनों ही बातें सत्य हो सकती हैं क्योंकि बौद्ध धर्म उस समय तुर्किस्तान, शाम और फिल्सतीन में फैला हुआ था। हाल में एक पुस्तकालय जमीन के नीचे दबी हुई बौद्ध-धर्म की तुर्किस्तान में मिली थी जिसकी सारी पुस्तकें ताड़ पत्रों पर हस्त लिखित थीं, यह सब यूरुप की लाइब्रेरियों में चली गईं ईसा ने कहीं मे इस विद्या को लिया हो, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह एक अहिंसावादी रिफार्मर थे। उनके उपदेश बड़े ही गहन और सत्य की भित्ति पर हैं। वह एक शांति प्रिय मनुष्य थे। वह चमत्कार बहुत दिखाया करते थे। पुस्तक बाइबिल इनकी करामातों की प्रशंसा में ही भरी पड़ी है। इनके प्रयोग रोगियों के रोग दूर करने के लिये ही अधिकतर हुआ करते थे। परन्तु यह शक्ति इन्होंने कहाँ से और कैसे प्राप्त की, यह एक प्रश्न है? इसका उत्तर प्राप्त करने के लिये जो तहकीकात अभी तक हुई है उससे यह पता चला है कि यह मन्त्र प्रयोग न तो कभी करते थे और न इसको जानते थे। यह हमेशा अपनी कल्पना-शक्ति के आधार पर सारी विभूतियाँ दिखाया करते थे, जिनको उन्होंने योग साधनों के द्वारा प्राप्त किया था। मनुष्य मनोबल से सब कुछ कर सकता है। ईसा मसीह ने इन अपनी मानसिक शक्तियों से लोगों को मोहित कर लिया, उनके अनुयाइयों की जब तादाद बढ़ने लगी तब एक नये धर्म की नीव डाली कि जिसका नाम 'खृष्टान धर्म' है। आज सारा यूरुप-और अमेरिका इसी धर्म को मानता है। एशिया और अफ्रीका में भी इनकी बहुत तादाद है। यह ईसाइयों का शक्तिवाद है जो मन्त्र और यन्त्र के आधार पर नहीं बल्कि मन की एकाग्रता से सम्बन्ध रखता है।

हठयोग का शक्तिवाद

ऊपर जो कुछ हमने वर्णन किया है वह शक्तिवाद का एक मजहबी-इतिहास था, अब आगे हठयोग और फिर राजयोग की उन क्रियाओं को क्रमशः बतलायेंगे कि जिनके द्वारा भिन्न-भिन्न शक्तियाँ अथवा सिद्धियाँ प्राप्त की जाती हैं । इसके पढ़ने पर आपको यह पता चलेगा कि एक ही वस्तु की प्राप्ति के लिये राजयोग क्या करता है और हठयोग क्या करता है । हठयोगी अत्यन्त कठिन परिश्रम पर जिन पदार्थों को प्राप्त कर पाता है, उनको राजयोगी कैसी सरलता से पहुँच जाता है। परन्तु इस बात के समझाने के लिये प्रथम हठयोग की शैली वर्णन करनी पड़ेगी तब बात ठीक समझ में आ सकती है इस लिये नीचे हठयोग का थोड़ा हाल लिखते हैं ।

हठयोग के प्रथम आचार्य

हठयोग का रिवाज कब से हुआ किस महात्मा ने इसका बीज संसार में सबसे प्रथम बोया, हठयोग की क्रियाओं को किसने बनाया, क्यों उनके बनाने की आवश्यकता हुई इत्यादि ? वर्तमान पुस्तकों से अभी तक इस बात का कोई ठीक-ठीक निर्णय नहीं हो सकता । इतिहास वेत्ताओं में से कोई तो हठयोग की उत्पत्ति बौद्धधर्म से मानते हैं, कोई शाक्त धर्म से, और कोई जैन धर्म से । कहीं से हो, परन्तु यह बात सब एक स्वर से कह रहे हैं कि इसके मुख्य प्रचारक गुरु "गोरखनाथ" जी हुए, इस लिये हम 'गोरख पद्धति' के अनुसार ही इसकी खोज करना चाहते हैं । इसके लिये हमारी पुस्तक पढ़िये 'गुरु गोरखनाथ एवं उनकी योग शैली ।"

प्राप्ति स्थान—
साधन प्रकाशन, डैम्पियर नगर, मथुरा ।

मुद्रक—
हैमेन्द्र कुमार,
साधन प्रेस, मथुरा ।

प्रकाशक—
हैमेन्द्र कुमार,
साधन प्रकाशन, मथुरा ।